

## रॉबर्ट वानॉय , व्यवस्थाविवरण, व्याख्यान 10बी

© 2011, डॉ. रॉबर्ट वानॉय , डॉ. पेरी फिलिप्स, और टेड हिल्डेब्रांट

### व्यवस्थाविवरण 12 में पूजा का केंद्रीकरण, हलवर्डा का लेख

तृतीय. पूजा का केंद्रीकरण और व्यवस्थाविवरण की तिथि के लिए इसके निहितार्थ ईस्वी सन् हलवर्डा का "वह स्थान जिसे प्रभु चुनेंगे" लेख

हमने पिछली कक्षा में रोमन अंक III का परिचय दिया था। यह " पूजा का केंद्रीकरण और व्यवस्थाविवरण की तिथि के लिए इसके निहितार्थ" है। मुझे लगता है कि मैं यहां जो करूंगा वह शुरुआत में आपके लिए एक लेख की सामग्री प्रस्तुत करेगा, जो मुझे लगता है कि इस विषय पर डी. हलवर्डा नाम के एक व्यक्ति द्वारा लिखा गया एक उत्कृष्ट लेख है। वह एक डच ओल्ड टेस्टामेंट विद्वान थे जिनकी लगभग 10 साल पहले 40 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई थी। अपनी मृत्यु के समय वह एक युवा विद्वान थे और उन्होंने प्रकाशन करना और कुछ जबरदस्त काम करना शुरू कर दिया था, लेकिन भगवान ने उन्हें ले लिया। उन्होंने इस मुद्दे पर एक लेख लिखा जो इस छोटी सी किताब में प्रकाशित हुआ जो केवल डच भाषा में उपलब्ध है। मैंने इसका सार संक्षेप में समझा और, कम से कम शुरुआत में, मैं आपको वह देना चाहता था क्योंकि मुझे लगता है कि वह समस्या को अच्छी तरह से सेट करता है, और इससे आप इसमें शामिल मुद्दों पर नियंत्रण पा सकते हैं। उनके लेख का शीर्षक है "वह स्थान जिसे प्रभु तुम्हारा परमेश्वर चुनेगा।" अब आप इसे व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 से आते हुए पहचानते हैं।

1. समस्या का विवरण वह कहता है, "कुछ बाइबल पाठकों को एहसास है कि इस वाक्यांश में हमें आधुनिक पुराने नियम के अध्ययन की मूल समस्या का सामना करना पड़ता है, फिर भी मामला यही है।" अब हो सकता है कि उन्होंने अपने मामले को थोड़ा बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया हो, लेकिन मुझे लगता है कि ऐसा करने का कुछ महत्व है। "आधुनिक पुराने नियम के अध्ययन की मूल समस्या इस वाक्यांश में पाई जाती है: 'वह स्थान जिसे प्रभु तुम्हारा परमेश्वर चुनेगा।' ऐसा इसलिए है क्योंकि इज़राइल में पूजा के वैध स्थान के संबंध में यह वाक्यांश है, जिसने इज़राइल के इतिहास पर

वेलहाउज़ेन के काम के पहले भाग की कुंजी बनाई जो बाद में उनकी पुस्तक द बन गई / *इज़राइल के इतिहास के लिए प्रोलेगोमेना*। उस कार्य की कुंजी इसी वाक्यांश पर केन्द्रित है। हलवर्डा कहते हैं, "कोई कह सकता है कि यह अध्ययन [ *द प्रोलेगोमेना टू द हिस्ट्री ऑफ़ इज़राइल*] पुराने नियम के अध्ययन में महान मोड़ था, और जब इसे प्रकाशित किया गया था, तब से विवरणों की आलोचना के बावजूद, इसमें बदलाव के लिए विधि और अनुसंधान. यह आज भी अपना प्रमुख स्थान बनाए हुए है। इसलिए वेलहाउज़ेन को धन्यवाद, व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 बाइबिल की पूरी तरह से विनाशकारी आलोचना के लिए स्प्रिंगबोर्ड बन गया है, लेकिन इसमें पुराने नियम का लगभग कुछ भी बरकरार नहीं बचा है। हलवर्डा जो कर रहा है वह वेलहौसेन की संपूर्ण जेईडीपी परिकल्पना के मूल में वेलहौसेन की ड्यूटेरोनॉमी 12 की व्याख्या को अत्यधिक महत्व दे रहा है।

हलवर्डा आगे कहते हैं, “जो अधिक उल्लेखनीय है वह यह है कि वेलहाउज़ेन ने व्यवस्थाविवरण 12 की एक व्याख्या दी, जिसमें अधिकांश भाग के लिए, बाइबल-विश्वास करने वाले अधिकांश व्याख्याताओं की सहमति है। उन्होंने व्यवस्थाविवरण 12 को इस अर्थ में पढ़ा कि इस्राएल की सभी भेंटें पूजा के एक केंद्रीय स्थान पर एक अभयारण्य से जुड़ी होनी थीं, जो अंततः मंदिर बन गया। सभी चढ़ावे उस केंद्रीय पूजा स्थल से जुड़े थे, और यरूशलेम के बाहर की प्रत्येक वेदी अवैध थी। उदाहरण के लिए, किसी अन्य ऊंचे स्थान से लाई गई प्रत्येक भेंट अवैध थी। क्यों? क्योंकि वह उस स्थान पर नहीं लाया गया जिसे यहोवा ने चुना था। इसलिए व्यवस्थाविवरण 12, वेलहाउज़ेन के अनुसार और अधिकांश बाइबिल-विश्वास करने वाले व्याख्याताओं के अनुसार, पूजा के इस केंद्रीकरण की मांग की। व्यवस्थाविवरण 12 का अर्थ था कि उस केंद्रीय अभयारण्य के अलावा किसी भी स्थान पर पूजा करना वर्जित था। मंदिर पर विशेष अधिकार थे।

जिस मुद्दे पर वेलहाउज़ेन और अधिकांश बाइबिल-विश्वास वाले विद्वान भिन्न हैं, वह यह है कि जबकि बाद वाले मूसा को व्यवस्थाविवरण 12 के लेखक के रूप में रखते हैं, वेलहाउज़ेन ने लेखन को योशियाह के समय में रखा, जो ऊंचे स्थानों से छुटकारा पाने और प्रतिबंधित करने वाले पहले व्यक्ति थे। यरूशलेम के मन्दिर में चढ़ावा।” हलवर्डा यहाँ जो प्रस्तुत कर रहे हैं वह अध्याय के अर्थ और व्याख्या में बाइबिल-विश्वास करने वाले व्याख्याताओं और वेलहाउज़ेन के बीच बुनियादी समझौता है, जो पूजा के केंद्रीकरण की घोषणा करता है, लेकिन बाइबिल-विश्वास करने वाले

व्याख्याता कहेंगे कि मूसा ने इसे लिखा था (लगभग 1400-1200 ईसा पूर्व)। वेलहौसेन कहेंगे कि यह योशियाह (621 ईसा पूर्व) का समय था, और वह पहला व्यक्ति था जिसने ऊँचे स्थानों को मिटाकर यरूशलेम में पूजा का विशेष केंद्र बनाने की कोशिश की थी। ताकि रूढ़िवादी पक्ष से अध्याय को मूसा के समय में रखा जा सके। वेलहाउज़ेन का मानना है कि यह योशियाह के समय का है, 621 ईसा

पूर्व। वेलहाउज़ेन के पूजा स्थल के 3 चरण: एकाधिक अभयारण्य, कई अभयारण्यों का भविष्यसूचक विरोध, 621 के लिए केंद्रीकृत पोस्ट-एक्सिलिक वेलहाउज़ेन का कारण यह है कि विशिष्ट पूजा का यह विनियमन किसी भी पहले की कल्पना करना असंभव है। उनका सिद्धांत इस दृष्टिकोण पर आधारित था कि जब आप पुराने नियम के ऐतिहासिक खंडों का अध्ययन करते हैं तो पूजा का केंद्र तीन स्पष्ट चरणों से गुज़रता है। यदि आप पुराने नियम के ऐतिहासिक खंडों को देखें, तो पूजा स्थल के संबंध में विकास के तीन स्पष्ट चरण हैं। पहला चरण यह था: वेदी किसी विशिष्ट स्थान से बंधी नहीं थी। वहाँ अनेक वेदियाँ और अनेक पूजा स्थल थे। न्यायाधीशों और शमूएल के समय में, आपको कई वेदियाँ प्रयोग में मिलती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि लोगों ने कनानियों के ऊँचे स्थानों पर कब्ज़ा कर लिया, और किसी को भी लगभग किसी भी स्थान पर वेदियाँ बनाने पर आपत्ति नहीं थी। सैमुअल के समय में, वह ऊँचे स्थानों पर बलि चढ़ाता था ताकि धार्मिक अनुष्ठान लगभग कहीं भी आयोजित किये जा सकें। वेलहाउज़ेन ने कहा कि बाद में मौजूदा पूजा स्थलों को दैवीय मंजूरी मिल गई, उन्होंने दावा किया कि उनकी उत्पत्ति एक विशेष स्थान पर भगवान की उपस्थिति के कारण हुई थी। इसे थियोफ़नी कहा जाता था, जो तब किसी स्थान को पूजा स्थल के रूप में वैध बनाता था। प्रभु बेतेल और शकेम में प्रकट हुए, इसलिए वे वैध स्थान थे। लेकिन इस पहले चरण में अन्य सभी को छोड़कर पूजा को एक स्थान तक सीमित रखने का कोई विचार नहीं था। वेलहाउज़ेन का आरंभिक, अधिक स्वतंत्र प्रकार की पूजा का विचार - आपके पास यह सहज प्रकार का धर्म है और जीवन का हर अवसर जो धन्यवाद की अभिव्यक्ति को जन्म देता है - पास में एक वेदी थी जहां बलिदान किए जाते थे।

लेकिन फिर धीरे-धीरे बदलाव आना शुरू हो गया। हम अभी भी दूसरे चरण में नहीं हैं,

लेकिन प्रारंभिक भविष्यवक्ताओं, अमोस और होशे के प्रभाव में बदलाव आना शुरू हो गया है। बेलगाम पंथ के विरुद्ध आलोचना उठने लगी। भविष्यवाणी आंदोलन के उदय के साथ, उन्होंने यह घोषणा करना शुरू कर दिया कि सच्ची पूजा बैल और बकरियों के खून की बलि नहीं है, बल्कि यह नैतिक जीवन है। भविष्यवक्ता सांस्कृतिक गतिविधि की इच्छा नहीं रखते थे; वे जीवन का उचित तरीका चाहते थे। वे नैतिकता चाहते थे। ऐसा नहीं था कि उन्होंने वेदियों की बहुलता का विरोध किया था, बल्कि उन्हें ऐसे धर्म में खतरा नज़र आया जो पंथ पर ज़ोर देता था क्योंकि जब लोग वेदी के पास इकट्ठा होते थे और सब कुछ करते रहते थे तो ईश्वर की नैतिक माँगों को उनका हक नहीं मिलता था। वे समारोह, भविष्यवक्ताओं के इस विरोध के कारण [ यह सब वेलहाउज़ेन का सिद्धांत है, हलवर्डा इसका सारांश दे रहा है] ऊंचे स्थानों ने अपना महत्व खो दिया। इसके अलावा, राजनीतिक स्थिति ने धीरे-धीरे यरूशलेम को अग्रभूमि में ला दिया। 722 में सामरिया के पतन के बाद, सांस्कृतिक पालन के संबंध में उत्तरी साम्राज्य से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं रह गई थी। लगभग उसी समय, भविष्यवक्ता यशायाह ने दक्षिण में यरूशलेम की अजेय स्थिति की घोषणा की। यशायाह के समय तक यरूशलेम को ध्यान का केंद्र मिलना शुरू हो गया।

ये सभी कारक मिलकर दूसरे चरण की ओर ले जाते हैं जिसमें यरूशलेम और मंदिर प्रमुख हो जाते हैं। वेलहाउज़ेन ने कहा कि यह समझा जाता है कि संपूर्ण पंथ का आमूल-चूल उन्मूलन सफल नहीं हो सकता। इसलिए सुधार और एकाग्रता का प्रयास किया गया। अब, आप पंथ को पूरी तरह से खत्म नहीं कर सकते। पैगंबर इसका विरोध कर रहे थे, लेकिन वे इसे पूरी तरह से खत्म नहीं कर सके, इसलिए इसे केंद्रित करने, इसमें सुधार करने का प्रयास किया गया और इस विकास के पीछे भविष्यवाणी का प्रभाव था। लेकिन भले ही पैगंबर और पुजारी घातक दुश्मन थे - मूल रूप से धार्मिक चिंता के दो अलग-अलग क्षेत्र - फिर भी पैगंबर और पुजारी ने सुधार और एकाग्रता के इस मामले में एक साथ काम किया। वहां उनका पारस्परिक हित था। क्योंकि यरूशलेम में पुजारियों को राजधानी में पूजा की एकाग्रता से एक बड़ा भौतिक लाभ हुआ था, भविष्यवक्ताओं ने भगवान की एकेश्वरवादी अवधारणा के संबंध में भी इसे बढ़ावा दिया। इसलिए आपको वास्तव में वेलहाउज़ेन की तरह, "बेथेल के देवता," "बेर्शाबा के देवता," इन सभी स्थानों के देवता के बारे में बात करना बंद करने की आवश्यकता है। एक ईश्वर और एक वैध पूजा स्थल था। तो इस सामान्य

प्रभाव, भविष्यसूचक प्रभाव और पुरोहिती प्रभाव के माध्यम से, यह सब यरूशलेम को छोड़कर ऊंचे स्थानों और भूमि में हर जगह पर पूजा को मिटाने के योशियाह के प्रयास पर आता है, और यह 621 में उसका महान सुधार था। वह दूसरा चरण है।

फिर भी वह प्रयास असफल हो गया; लोग पवित्र स्थानों से जुड़े हुए थे। जैसे ही योशियाह की मृत्यु हुई, पूजा इन स्थानों पर लौट आई। वेलहाउज़ेन के अनुसार, यदि निर्वासन न होता तो सुधार का शेष प्रभाव कभी नहीं होता। क्योंकि निर्वासन के साथ, लोगों को पूरी तरह से उखाड़ दिया गया, भूमि से बाहर कर दिया गया, और पूरी पूजा प्रणाली को तोड़ दिया गया। जब 539 ईसा पूर्व में साइरस ने आदेश दिया जिसमें वापसी की अनुमति दी गई, तो एक ऐसी पीढ़ी थी जो कभी भी बलिदान देने में सक्षम नहीं थी। वे पहले के समय की पुरानी प्रथाओं के साथ बड़े नहीं हुए थे। और केवल उस बिंदु पर लोगों की एक ऐसी पीढ़ी थी जो केंद्रीकृत पंथ के सुधार विचारों की पूर्ति के लिए अपना दिल और आत्मा समर्पित कर सकती थी।

तो यह तीसरे चरण में लाता है: निर्वासन ने अतीत के साथ इसे पूरी तरह से तोड़ दिया, और निर्वासन और वापसी के बाद, लोगों ने ऊंचे स्थानों की स्थापना के बारे में नहीं सोचा। उन्होंने पैगम्बरों और पुजारियों के पहले के लक्ष्य को स्वतः स्पष्ट मान लिया कि पूजा का एक स्थान होना चाहिए, और वह यरूशलेम में मंदिर था। वह तीसरा चरण है: निर्वासन के बाद किसी एक पूजा स्थल पर वास्तविक रूप से टिके रहने का समय, जो उससे पहले कभी अनुभव नहीं किया गया था।

बी। Deut का महत्व. वेलहाउज़ेन सिद्धांत के लिए 12 हम वेलहाउज़ेन की स्थिति की पृष्ठभूमि तय करने और अध्याय 12 द्वारा निर्भाई गई मुख्य भूमिका को समझने के लिए थोड़ा आगे जाना चाहते हैं, और फिर देखें कि अध्याय क्या कहता है और हम उसके साथ क्या करते हैं। मैं आपके लिए "वह स्थान जिसे प्रभु आपका ईश्वर चुनेगा" विषय पर हलवर्डा द्वारा लिखे गए लेख और वेलहाउज़ेन के इस जेईडीपी सिद्धांत की संपूर्ण संरचना के संबंध में व्यवस्थाविवरण अध्याय 12 की व्याख्या को वह जो महत्व देता है, उसका सारांश देना जारी रखूंगा। और इस प्रक्रिया में, उन्होंने यह उल्लेख करते हुए शुरुआत की कि वेलहाउज़ेन का सिद्धांत इज़राइल में पूजा के इतिहास के संबंध में तीन स्पष्ट चरणों से गुज़रा। तो पहला चरण था जिसमें अभयारण्यों की बहुलता थी। पवित्र स्थलों की बहुलता

के विरोध और पूजा के केंद्रीकरण के पक्ष में भविष्यवक्ताओं के प्रभाव वाला दूसरा चरण था। लेकिन यह निर्वासन के बाद तक पूरी तरह से सफल नहीं था जब हम निर्वासन के बाद के समय पर आते हैं। फिर आप तीसरे चरण में आते हैं जहां आपके पास केंद्रीय, विशिष्ट पूजा स्थल की स्थापना होती है। तो आम तौर पर यही वह विकास था जिसका उन्होंने खाका खींचा था और हमने आखिरी कक्षा के समय में उस पर चर्चा की थी।

सी। इज़राइल की पूजा वेदी स्थानों में 3 चरण

### 1. कानून संहिता: निर्वासन. 20

तो उस बिंदु से, पूजा स्थल के संबंध में इज़राइल की पूजा के इतिहास के इन चरणों को उठाएं: वेदियों की बहुलता, वेदियों का केंद्रीकरण, जो कुछ भी - वह प्रगति है जिसे वेलहाउज़ेन ने देखा था। अब, जारी रखना है. वेलहाउज़ेन ने कहा कि इतिहास न केवल इन तीन चरणों में आगे बढ़ा, बल्कि हम दिए गए कानून में उन्हीं तीन चरणों की खोज करते हैं। न केवल पूजा का इतिहास उस क्रम में आगे बढ़ा, बल्कि इज़राइल के कानूनों में भी आपको उन्हीं तीन चरणों का प्रतिनिधित्व मिलता है। उनके ऐसा कहने का कारण यह है कि निर्गमन 20 का वेदी नियम सिद्धांत के पहले चरण से मेल खाता है: वेदियों की बहुलता। वेदी का कानून निर्गमन 20 में पाया जाता है। अब निर्गमन 20 "वाचा की पुस्तक" में आता है, और श्लोक 24 से 26 में आप पढ़ते हैं, "तू मेरे लिये मिट्टी की एक वेदी बनाना, और उस पर अपने होमबलि चढ़ाना।" और तुम्हारे मेलबलि, तुम्हारी भेड़-बकरियां, और तुम्हारे बैल; जहां जहां मैं अपना नाम लिखूंगा वहां तुम्हारे पास आऊंगा, और तुम्हें आशीर्वाद दूंगा। और यदि तू मेरे लिये पत्थरों की वेदी बनाना चाहे, तो तराशे हुए पत्थरों से न बनाना; क्योंकि यदि तू उस पर अपना औज़ार उठाएगा, तो तू ने उसे अशुद्ध किया है। और न मेरी वेदी के पास सीढ़ियां चढ़कर चढ़ना, ऐसा न हो कि उस पर तेरा नंगापन प्रगट हो।

2. व्यवस्थाविवरण 12: एक स्थान पर केंद्रीकरण वाक्यांश पर ध्यान दें "लेकिन उन सभी स्थानों पर जहां मैं अपना नाम दर्ज करता हूं।" प्रभु उनके पास आएंगे, और जो वेदियां विभिन्न स्थानों में बनाई गई थीं, वे उस विवरण के अनुरूप होनी चाहिए जो वह वहां बताता है। लेकिन वेलहाउज़ेन के अनुसार, निर्गमन 20 के वेदी कानून में पहले चरण के अनुरूप वेदियों की बहुलता का अनुमान

लगाया गया था। उस कानून को जे और ई - जेई दस्तावेज़ - के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है और वहां प्रतिबिंबित वेदियों की बहुलता की तस्वीर उन दो स्रोतों द्वारा प्रदान की गई ऐतिहासिक तस्वीर से मेल खाती है।

अब, जब आप आगे बढ़ते हैं, तो व्यवस्थाविवरण 12, वेलहाउज़ेन के अनुसार, अन्यजातियों के चढ़ावे के स्थानों को नष्ट करने की मांग करता है और आदेश देता है कि प्रभु की पूजा एक ही स्थान पर की जाए। तो, व्यवस्थाविवरण, और व्यवस्थाविवरण 12 में कानून, इस विकास के दूसरे चरण के अनुरूप हैं। निःसंदेह, जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी, वेलहाउज़ेन का कहना है कि यह 621 ईसा पूर्व का समय है जब योशियाह ने अपने सुधार को बढ़ावा दिया था। उनके जेईडीपी स्रोतों में से, जो केवल पी को छोड़ता है। और वेलहाउज़ेन के अनुसार, पी स्पष्ट रूप से डी से बाद में है क्योंकि डी में केंद्रीकरण का स्पष्ट रूप से आदेश दिया गया है और इस प्रकार अभी भी मौजूदा, विपरीत प्रथाओं को ढूंढना होगा, लेकिन पी अब उस पर जोर नहीं देता है। पी बस यह मानता है कि एक केंद्रीय अभयारण्य सामान्य है। उस दस्तावेज़ में केवल एक ही स्थान है। पी के अनुसार इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता था ही नहीं। यह सिर्फ अनुमान की बात है; पूजा का स्थान एक ही है, और वेदियों की बहुलता से यह कोई विवाद का विषय नहीं है। पी के समय में, उन्होंने मान लिया कि पूजा का एक ही स्थान था; हर कोई इससे सहमत है। फिर वह उसे तीसरे चरण में निर्दिष्ट करता है: उसकी उत्पत्ति के लिए निर्वासन के बाद के समय को।

अब उन्हें लगता है कि उस क्रम की पुष्टि अन्य मामलों से भी हो गई है - हम उन सब में नहीं जाना चाहते हैं - लेकिन वेलहाउज़ेन की प्रणाली की शक्ति केवल एक ही बिंदु पर नहीं टिकी हुई है, बल्कि उन्होंने इस मुद्दे पर बहुत से विचार किए हैं विभिन्न दिशाओं की, और उनकी पूजा का विकास कुछ ऐसा है जो बहुत सारे एकत्रित साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष पर आता है। यह सिर्फ एक कारक है जो उनके सिद्धांत की कुंजी है: पूजा स्थल की प्रगति और संबंध, न केवल ऐतिहासिक रूप से बल्कि कानूनी रूप से भी। उनके पास एक पक्की तारीख है, 621 ईसा पूर्व और वह डी दस्तावेज़। इसलिए उन्होंने 621 से पहले के समय तक काम किया; फिर उन्होंने 621 से लेकर निर्वासन के बाद की इस सामग्री तक दूसरी दिशा में काम किया।

बेशक, परिणाम पूरे पुराने नियम को तबाह कर देता है। क्योंकि, पुराने नियम की नींव के

रूप में क्या कार्य करता है? - पेंटाटेच। उन्होंने पेंटाटेच को जेईडीपी स्रोत दस्तावेजों में विभाजित किया है, और उनमें से कोई भी अब मूलभूत नहीं है। क्योंकि मूसा, आने वाली सभी चीज़ों की नींव होने के बजाय, परिणाम है। वह परिणाम है। वह अंतिम बिंदु है जिस पर पुराने नियम के धर्म के इतिहास में पहुंचा गया है। पुराने समय में धर्म कनानी धर्म से भिन्न नहीं था। प्रभु केवल एक देवता थे जो अन्य कनानी देवताओं से भिन्न नहीं थे। ताकि वेलहाउज़ेन की प्रणाली का शुरुआती बिंदु मोज़ेक रहस्योद्घाटन न हो, बल्कि प्रारंभिक सेमिटिक बुतपरस्ती हो। वेलहाउज़ेन की प्रणाली बुतपरस्तवाद से लेकर मूसा तक चलती है। तो, बाइबिल की संरचना के अनुसार, शुरुआत क्या है? - मोज़ेक रहस्योद्घाटन। वेलहाउज़ेन के लिए, "मोज़ेक रहस्योद्घाटन" अंत है। यहीं पर सब कुछ आगे बढ़ रहा है, विशेष रूप से एकेश्वरवाद, पूजा के केंद्रीकरण की दिशा में भविष्यवाणी आंदोलन, और अंततः इसके निहितार्थों पर काम करना, और लेवीय विधान अपने विस्तृत अनुष्ठान के साथ। वह अंतिम बिंदु है।

### 3. नवप्रवर्तकों के रूप में भविष्यवक्ता

कई पूजा स्थलों को नष्ट करने और केंद्रीकरण की ओर बढ़ने की उस पूरी प्रक्रिया में, भविष्यवक्ताओं को हवा में लटका दिया गया है। क्योंकि भविष्यवक्ता अब मूसा की नींव पर खड़े सुधारक नहीं रहे। भविष्यवक्ता पुराने तरीकों की घोषणा नहीं करते और लोगों को उनकी ओर वापस नहीं बुलाते। भविष्यवक्ता नवप्रवर्तक हैं: वे नए तरीकों की घोषणा कर रहे हैं। इसलिए भविष्यवक्ताओं का कार्य मूसा के मार्ग का बचाव करना और उसकी घोषणा करना नहीं है, आप कह सकते हैं, जो मूल रूप से बुतपरस्तवाद के खिलाफ प्रकट किया गया था, और इज़राइल को उनके तर्क पर वापस बुलाना कि इज़राइल बुतपरस्त मूल से अलग है। लेकिन भविष्यवक्ता प्रारंभिक बुतपरस्ती से अपने नैतिक उपदेशों के द्वारा लोगों का नेतृत्व करते हैं और अंततः उन्हें मूसा के पास लाते हैं। वेलहाउज़ेन का सिद्धांत यही करता है। भविष्यवक्ता अपने नैतिक उपदेशों द्वारा लोगों को बुतपरस्ती से बाहर ले जाते हैं और वास्तव में उन्हें "मूसा" यानी वेलहाउज़ेन प्रणाली के "मूसा" के पास ले आते हैं।

## 2. वेलहाउज़ेन के ड्यूट पर हलवर्डा की प्रतिक्रियाएँ। 12 सिद्धांत

अब, यह मूल रूप से वेलहाउज़ेन की प्रणाली के बारे में हलवर्डा का मूल्यांकन है। मुझे लगता है कि इससे आपको इसके बारे में कुछ जानकारी मिलती है और आपको इस पर कुछ नियंत्रण मिलता है जो उपयोगी हो सकता है। यदि आप वेलहाउज़ेन की *प्रोलेगोमेना पढ़ते हैं*, तो यह एक अत्यधिक जटिल पुस्तक है। मुझे लगता है कि हलवर्डा में प्रस्तुति इसके कुछ निहितार्थों को देखने में सहायक है। हलवर्डा का मुख्य बिंदु यह है कि वेलहाउज़ेन के सिद्धांत के विरोध का इतिहास ज्यादातर इस प्रणाली के मूल में जाने के बजाय इसके विभिन्न विवरणों के विरुद्ध निर्देशित है। बेशक, ऐसा नहीं है कि विवरण भी उपयोगी नहीं हैं, लेकिन यहां हलवर्डा के दृष्टिकोण के अनुसार, इस प्रणाली का दिल "पूजा का केंद्रीकरण" मुद्दा है, और वेलहाउज़ेन की पूरी प्रणाली में यही मुख्य बिंदु है। इसीलिए, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, हलवर्डा ने अपने लेख की शुरुआत में कहा, "कुछ बाइबिल पाठकों को एहसास है कि इस वाक्यांश में, 'वह स्थान जिसे प्रभु आपका भगवान चुनेगा,' हम आधुनिक पुराने नियम के अध्ययन की मूल समस्या का सामना कर रहे हैं।" इसीलिए उन्हें लगता है कि यह इतना महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि हलवर्डा ने अपने मामले को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया होगा, लेकिन फिर भी यहां कुछ ऐसा है जिसके बहुत बड़े निहितार्थ हैं।

एक। ऐतिहासिक पुस्तकों में स्वीकृत एकाधिक वेदियाँ (cf. 1 किलोग्राम 18-19) एलिय्याह और माउंट कार्मेल पर बाल के पैगंबर अब, वह जो करने जा रहा है वह यह है: वह बताता है कि उस समय को कवर करने वाली ऐतिहासिक पुस्तकों में उदाहरण हैं न्यायाधीशों से लेकर राज्य काल के समय तक, जहां ऐतिहासिक पुस्तकों में वेदियों की बहुलता का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया था। उनका कहना है कि यह कहकर संतुष्ट होना मुश्किल है कि प्रत्येक मामले में इन अलग-अलग वेदियों पर पूजा अवैध थी।

वह बताते हैं कि पूजा के ऐसे उदाहरण हैं जो अवैध थे और कानून के अनुरूप नहीं थे। उदाहरण के लिए, न्यायियों 17 से आरंभ करते हुए, मीका ने जिस पूजा को बढ़ावा दिया, उसका वर्णन न्यायियों की पुस्तक के उन बाद के अध्यायों में किया गया है, जहां वह निजी अभयारण्य लेवी के साथ स्थापित किया गया था, स्पष्ट रूप से मूर्तिपूजा शामिल थी। यह अवैध पूजा थी। इसके

अलावा नबात के पुत्र यारोबाम का बेतेल और दान में अपने बछड़ों को स्थापित करना निश्चित रूप से यरूशलेम में पूजा के लिए एक प्रतिद्वंद्वी पूजा केंद्र बनने का इरादा था, और इस तरह, एक पाप के रूप में निंदा की गई थी।

लेकिन वह कहते हैं, यह सब इस तथ्य से दूर नहीं है कि इस अवधि में वेदियों की बहुलता की निंदा नहीं की गई थी, बल्कि मंजूरी दी गई थी। वह कई मामलों में इसकी ओर इशारा करते हैं। एलिय्याह के मामले में, उत्तरी साम्राज्य के अहाब के समय में, जहां वह बाल पूजा और बाल के पैगम्बरों का विरोध करता था, आई किंग्स 18 में कार्मेल पर्वत पर लोगों के साथ उस टकराव के बाद, जब ईजेबेल एलिय्याह के पीछे आता है, तो वह बहुत उग्र हो जाता है हतोत्साहित। वह ईजेबेल के पास से भागकर जंगल में चला गया; और 1 राजा 19:10 में, जब वह एक गुफा में आराम कर रहा है, और प्रभु कहते हैं, "एलियाह, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" उसने उत्तर दिया, "सेनाओं के परमेश्वर यहोवा के लिये मुझे बहुत जलन हुई है, क्योंकि इस्राएलियों ने तेरी वाचा टाल दी है, तेरी वेदियों को गिरा दिया है, और तेरे भविष्यद्वक्ताओं को तलवार से घात किया है, और मैं ही बचा हूँ, और अब वे मेरी जान लेना चाह रहे हैं।" एलिय्याह की एक शिकायत यह है कि लोगों ने बहुवचन में प्रभु की वेदियों को गिरा दिया था। उन्होंने प्रभु की वेदियों को त्याग दिया था और जाहिर तौर पर बुतपरस्त वेदियों का अनुसरण कर रहे थे। कुछ ही समय पहले एलिय्याह ने कार्मेल पर्वत पर स्वयं एक वेदी बनवाई थी। प्रथम राजा 18:31 में, "एलिय्याह ने याकूब के पुत्रों के गोत्रों की संख्या के अनुसार 12 पत्थर लिए। पत्थरों से उसने यहोवा के नाम पर एक वेदी बनाई और वेदी के चारों ओर एक खाई बनाई। तब उसने प्रार्थना की और प्रभु ने उस प्रार्थना का उत्तर दिया। और आपको इस बात का ज़रा भी संकेत नहीं मिलता कि जेरूसलम वेदी के अलावा उसके निर्माण से जुड़ी कोई अवैधता है। आपको सुझाव मिलता है, कम से कम I किंग्स 19:10 में, कि उस समय के इस्राएलियों के खिलाफ वैध आलोचना का एक बिंदु यह था कि उन्होंने प्रभु की वेदियों को नष्ट कर दिया।

बी। एकाधिक वेदियों के प्रति कोई भविष्यसूचक विरोध नहीं, जैसा कि हालवर्डा बताते हैं, यह भी कम से कम दिलचस्पी की बात है कि हमने कभी भी वेदियों की बहुलता के विरुद्ध भविष्यसूचक विरोध के बारे में नहीं पढ़ा। भविष्यवाणी संदेश का कोई तत्व ऐसा नहीं है जो स्पष्ट रूप से वेदियों

की बहुलता के विरुद्ध निर्देशित हो। अब, यदि यह कोई मुद्दा था, तो इसे मौन रहकर बहस करनी होगी। आप कम से कम भविष्यवक्ताओं पर इस मुद्दे की उपेक्षा का आरोप लगा सकते हैं। वेदियों की बहुलता के खिलाफ भविष्यवक्ता दृढ़ता से क्यों नहीं सामने आए?

सी। सैमुअल के पास अनेक वेदियाँ थीं वेदियों की बहुलता के मुद्दे पर सैमुअल की पुस्तकें विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। शमूएल एक भविष्यवक्ता था; वह एक सुधारक थे; उसने विभिन्न वेदियाँ बनाई, और उसने विभिन्न वेदियों पर बलिदान दिया। प्रथम शमूएल अध्याय 9 में वह रामा में एक ऊंचे स्थान पर जाता है और रामा शहर में एक बलिदान चढ़ाता है। 1 शमूएल 7 और 1 शमूएल 10 में, शमूएल मिस्या में बलिदान चढ़ाता है। और 1 शमूएल 11:15 में वह गिलगाल में एक प्रदान करता है। तो आपके पास रामा, मिस्या और गिलगाल में वेदियों पर शमूएल द्वारा भेंट चढ़ाने का स्पष्ट उल्लेख है।

आपके पास 1 शमूएल 16:2 में बेथलेहेम में उनके द्वारा भेंट देने का संदर्भ भी है, जो दैवीय रूप से स्वीकृत प्रतीत होता है, क्योंकि, संदर्भ पर ध्यान दें: "प्रभु ने शमूएल से कहा, 'तुम कब तक शाऊल के लिए विलाप करते रहोगे, मैंने देखा है उसे इस्राएल पर राज्य करने से अस्वीकार कर दिया? अपने सींग में तेल भर ले और जा, मैं तुझे बेतलेहेमवासी यिशै के पास भेजूंगा, क्योंकि मैं ने उसके पुत्रोंके बीच में अपने लिये राजा ठहराया है। जाओ, यिशै के पुत्रों में से किसी एक का अभिषेक करो।' सैमुअल कहते हैं, 'मैं कैसे जाऊंगा? यदि शाऊल ने इसके बारे में सुना, तो वह मुझे मार डालेगा।' शाऊल राजा था, वह दूसरे राजा का अभिषेक करने जा रहा है और शमूएल उसका विरोध करने जा रहा है। "प्रभु कहते हैं, 'अपने साथ एक बछिया ले जाओ और कहो, 'मैं यहोवा के लिए बलि चढ़ाने आया हूँ।'" ऐसा लगता है कि किसी के लिए बछिया लेना, बेथलेहम जाना और बलि चढ़ाना एक सामान्य प्रथा थी। त्याग करना। इससे शाऊल की ओर से किसी भी प्रकार की कोई जिज्ञासा उत्पन्न नहीं हुई होगी।

डी। बेथलेहम में दाऊद का "बलिदान" स्वीकार किया गया। बाद के अवसर में, जब दाऊद का अभिषेक हो चुका था और शाऊल अभी भी राजा था, शमूएल 20 में दाऊद शाऊल की मेज पर

अपने स्थान पर नहीं था। जब शाऊल की जिज्ञासा जगी कि दाऊद क्यों था? वहाँ, हम 1 शमूएल 20:24 में पाते हैं, “दाऊद ने अपने आप को एक खेत में छिपा लिया। जब नया चाँद आया, तब राजा भोजन करने को बैठा, और वह पहिले के समान अपने आसन पर, अर्थात् शहरपनाह के पास के आसन पर बैठा; और योनातान खड़ा हुआ, और अब्रेर शाऊल के पास बैठा, और दाऊद का स्थान खाली रहा . तौभी शाऊल ने उस दिन कुछ न कहा, क्योंकि उस ने सोचा, कि उस पर कुछ विपत्ति पड़ी है, वह शुद्ध नहीं है; निश्चित रूप से वह शुद्ध नहीं है।” दूसरे शब्दों में, ऐसा लगता है कि यह किसी प्रकार का धार्मिक भोजन रहा होगा क्योंकि पहला विचार यह था कि वह अनुष्ठानिक रूप से आने में सक्षम नहीं था। परन्तु फिर दूसरे दिन शाऊल ने योनातान से कहा, यिशै का पुत्र न तो आज, न कल मेज पर क्यों आता है? योनातान ने शाऊल को उत्तर दिया, दाऊद ने बेतलेहेम जाने के लिये मुझ से बिनती करके छुट्टी मांगी। उसने कहा, “मुझे जाने दो, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ; क्योंकि हमारे परिवार का नगर में बलिदान है; और मेरे भाई, उसने मुझे वहाँ रहने की आज्ञा दी है।” इसलिए वह फिर बेतलेहेम गया। क्यों? बलि चढ़ाना. उसके भाई ने उसे वहाँ उपस्थित रहने का आदेश दिया था, और यही कारण था कि वह तब शाऊल की मेज पर नहीं था। तो वह स्थानीय भेंट स्पष्टतः उस समय एक प्रथा थी और किसी ने भी कानून से कोई विचलन नहीं देखा क्योंकि कोई व्यक्ति बलि चढ़ाने के लिए किसी भिन्न स्थान पर जा रहा था।

इ। Deut. 12 और दाऊद की इच्छा थी कि वह परमेश्वर का भवन बनाए, परन्तु फिर कुछ लोग कहते हैं कि यह अस्थिर समय था; मंदिर अभी तक नहीं बनाया गया था, और व्यवस्थाविवरण 12:10 कहता है, "जब तुम यरदन पार जाओ और उस देश में बस जाओ जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विरासत में देता है, और जब वह तुम्हें चारों ओर के सभी शत्रुओं से विश्राम देगा, तब कि तुम सुरक्षित रहो; तब वहाँ एक स्थान होगा जिसे तेरा परमेश्वर यहोवा अपने नाम का निवास करने के लिये चुन लेगा। दूसरे शब्दों में, जब इस्राएलियों को आराम मिल जाएगा, तब केंद्रीकृत पूजा होगी। अक्सर यह बात कही जाती है, कि व्यवस्थाविवरण यह कहता है, और 2 शमूएल 7:11 ही वह बिंदु है जिस पर उन स्थितियों को महसूस किया गया था। अब 2 शमूएल 7 वह अध्याय है जिसमें दाऊद से उसके घर, या राजवंश के संबंध में प्रभु के वादे शामिल हैं, जिसे प्रभु हमेशा के लिए स्थापित

करने जा रहे थे जब दाऊद ने पूछा था कि क्या वह प्रभु के लिए एक घर या मंदिर बना सकता है। आयत 11 में कहा गया है, "और जब से मैं ने अपनी प्रजा इस्राएल पर न्यायियों को नियुक्त किया, और तुझे तेरे सब शत्रुओं से विश्रम दिया, तब से यहोवा तुझ से कहता है, कि वह तेरे लिये एक घराना/वंश बनाएगा।" अब, कुछ लोगों ने यह तर्क देने की कोशिश की है कि द्वितीय सैमुअल 7 से पहले वेदियों की बहुलता के किसी भी उद्धरण को मंजूरी दे दी गई थी क्योंकि बहुलता तब तक स्वीकार्य थी जब तक कि भगवान आराम नहीं देते थे और जब तक शांति की स्थिति स्थापित नहीं हो जाती थी जिसमें पूजा की केंद्रीयता अच्छी तरह से काम कर सकती थी।

एफ। अबशालोम और हेब्रोन अभयारण्य लेकिन अगर ऐसा मामला है, तो यह एलिय्याह के साथ मदद नहीं करता है और इसके अलावा, अबशालोम ने, उदाहरण के लिए, 2 शमूएल 7:11 के बाद भी, हेब्रोन में अभयारण्य में अपनी क्रांति का आयोजन किया। 2 शमूएल 15 में, डेविड ने अपने बेटे की मन्नत पूरी करने के लिए हेब्रोन जाने की इच्छा को मंजूरी दे दी, फिर भी बलिदान देने के लिए कहीं और जाने के बारे में कोई बड़ी निराशा नहीं हुई। 2 शमूएल 15:7: "चालीस वर्ष के बाद अबशालोम ने राजा से कहा, मुझे हेब्रोन में जाकर अपनी मन्नत पूरी करने दे, जो मैं ने यहोवा के लिये मानी है। क्योंकि तेरा दास जब सीरिया के गशूर में था, तब उसने यह कहकर मन्नत मानी, कि यदि यहोवा मुझे सचमुच यरूशलेम को लौटा ले आए, तो मैं यहोवा की उपासना करूंगा। हेब्रोन जाता है और वहां एक क्रांति शुरू करता है, लेकिन हेब्रोन जाने का अवसर फिर से मन्नत चुकाने और बलिदान देने का था।

जी। आराम और स्थान केवल सुलैमान के दिन में संभव है - इसके अलावा कोई जोशुआ का दिन नहीं, और यह 2 सैमुअल 7 संदर्भ के लिए हलवर्डा की प्रतिक्रिया है, यदि बाहरी दुश्मनों का मतलब आराम और शांति के इस मामले से है, तो व्यवस्थाविवरण 12 का आवेदन वास्तव में केवल इसके दौरान ही संभव है सुलैमान के समय और उसके बाद बहुत ही संक्षिप्त अवधि के लिए क्योंकि यदि आप बाहरी दुश्मनों के बारे में बात कर रहे हैं, तो इज़राइल राष्ट्र के इतिहास में लगभग लगातार बाहरी दुश्मनों से खतरा था। केवल एक छोटा सा समय था जब बाहरी शत्रुओं का कोई खतरा नहीं

था। तो हलवर्डा का कहना है कि व्यवस्थाविवरण 12 में उल्लिखित बाकी का संदर्भ बाहरी शत्रुओं से नहीं है, बल्कि आंतरिक शत्रुओं से है, और उस स्थिति की उपलब्धि वास्तव में जोशुआ 22:4 में संदर्भित है, ठीक कनान की विजय के समापन पर। यहोशू 22 में, विजय के बाद और ढाई गोत्रों को घर भेज दिया गया, हम श्लोक 4 में पढ़ते हैं, “और अब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे भाइयों को अपने वचन के अनुसार विश्राम दिया है। इसलिये अब लौट आओ, और अपने डेरे और अपनी निज भूमि में पहुंचो, जो यहोवा के दास मूसा ने यरदन के पार तुम्हें दिया है। परन्तु आज्ञा और व्यवस्था के पालन में पूरा ध्यान लगाओ।” ताकि वह व्यवस्थाविवरण के वादों में उल्लिखित "बाकी" को दाऊद के समय से बहुत पहले पूरा होते हुए देख सके; यह यहोशू के समय में पूरा हुआ।

ठीक है, फिर थोड़ा और आगे जाना है। निर्गमन 20:24-26 परिच्छेद, वहां के नियमों का क्या मतलब है? हम इसे अगली बार जारी रखेंगे।

एंजी सिकेनी द्वारा प्रतिलेखित  
 टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन  
 डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया